C-3 B.Ed- 1st Year (2019-2021)

विचार गोष्ठी या संगोष्ठी प्रविधि
SEMINAR TECHNIQUE

विचार गोष्ठी अनुदेशन की ऐसी प्रविधि है, जिससे चिन्तन स्तर के अधिगम के लिये अन्तःप्रक्रिया की परिस्थिति उत्पन्न की जाती है। इस प्रविधि को विभिन्न स्तरो पर अनुदेशन - परिस्थितियो के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

यह समूह चर्चा का ही एक प्रकार है। इसमे एक या कई प्रशिक्षु होते है, जो दिये गए विषय, मुद्दे या समस्या पर पेपर तैयार करते है, जिसे पूरे समूह मे चर्चा या विश्लेषण के लिए प्रस्तुत किया जाता है। सेमिनार के मुख्य चरण है- पेपर की तैयारी, पेपर की प्रस्तुति, और तत्पश्चात उस पर चर्चा करना।

विचार गोष्ठी के उद्देश्य (Objectives of Seminar) :-

प्रजातान्त्रिक राष्ट्र एवं समाज के लिये सेमीनार प्रविधि अधिक उपयोगी है। इस प्रविधि के प्रयोग से ज्ञानात्मक तथा भावात्मक उच्च उद्देश्यो की प्राप्ति की जाती है। ~~सेमि~~ सेमिनार के उद्देश्यो को दो वर्गो में बांटा जा सकता है —

(1) ज्ञानात्मक उद्देश्य (Cognitive Objective) :-

⇒ विश्लेषण तथा आलोचनात्मक क्षमताओ का विकास करना

⇒ संश्लेषण तथा मूल्यांकन की योग्यता का विकास करना

⇒ निरीक्षण तथा अनुभवो के प्रस्तुतीकरण की क्षमताओं का विकास करना

⇒ किसी प्रकरण सम्बन्धी स्पष्टीकरण करने तथा उससे सम्बन्धित समस्याओ के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।

2 - भावात्मक उद्देश्य (Affective Objective) :-

⇒ अन्य व्यक्तियों के विरोधी विचार तथा दृष्टिकोण की सहनशीलता का विकास होता है।

⇒ विचारो की स्वच्छन्दता तथा दूसरो से सहयोग की भावना का विकास होता है।

⇒ भावात्मक स्थिरता का विकास होता है।

⇒ दूसरो की भावनाओ के प्रति सम्मान की भावना का विकास होता है

Scanned by CamScanner

04/08 C-3 B.Ed 2019-2021

सामूहिक परिचर्चा या सामूहिक वाद-विवाद विधि
GROUP DISCUSSION METHOD

किसी विषय-वस्तु, समस्या या विषय पर गहनतापूर्वक विचार करने की सामूहिक प्रक्रिया को समूह परिचर्चा के नाम से पुकारा जाता है। इसके माध्यम से कई जटिल एवं दुरूह विषयों का सम्यक विश्लेषण, अवबोध एवं मूल्यांकन होता है। परिचर्चा में भाग लेने वाले सभी छात्र एवं शिक्षक तल्लीनता के साथ हर मुद्दे पर सोचते है और अपना अभिमत व्यक्त करते है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना विचार या मत जाहिर करने की पूरी स्वतन्त्रता रहती है और इस प्रकार प्रत्येक की राय को दृष्टिगत रखते हुए बहुमत के आधार पर विषय या समस्या के बारे मे निर्णय लिये जाते है। परिचर्चा को मूलतः लोकतान्त्रिक व्यवस्था का लघुरूप कहा जाता है।

स्वरूप (Form) — सामूहिक परिचर्चा का स्वरूप इस प्रकार है —

1 - सामूहिक वाद विवाद के दो रूप होते है - औपचारिक तथा अनौपचारिक। औपचारिक कार्यक्रम को पहले से बनाया जाता है। इसमे विशिष्ट नियमो का अनुसरण किया जाता है।

2 - सामूहिक वाद-विवाद किसी शैक्षिक समस्या तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्या पर आयोजित किया जाता है।

3 - छात्रों द्वारा व्यवस्था करने पर उन्हे नेता का चयन करना पड़ता है, जो उसका कार्यक्रम बनाता है।

4 - इसमे छात्रों के प्रश्नों तथा उत्तरों को ही महत्व दिया जाता है।

अधिनियम (Assumptions) यह विधि निम्नलिखित अधिनियमो पर आधारित है -

1 - यह विधि सक्रियता तथा मौलिकता के विकास को अवसर देती है।

2 - प्रत्येक छात्र को प्रश्न पूछने तथा उत्तर देने का समान अधिकार होता है।

3 - प्रजातान्त्रिक अधिनियमो का अनुसरण किया जाता है।

4 - सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक अधिनियमो को महत्व दिया जाता है।

विशेषताएं - सामूहिक परिचर्चा की प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार है -

1 - इसमे आलोचना के लिये अधिक अवसर होता है। त्रुटिपूर्ण आयामो (Incorrect Approaches) का खण्डन किया जाता है। समस्या समाधान के लिये व्यापक आयामो के प्रयोग का अवसर दिया जाता है।

2 - जो छात्र समस्या-समाधान तथा अपने निर्णय लेने मे कमजोर होते है, उनके लिये यह विधि अधिक उपयोगी होता है।

3 - सामूहिक वाद-विवाद छात्रों की अभिवृत्तियों के विकास के लिये अधिक उपयोगी होता है।

4 - इस विधि की सहायता से छात्रों की सर्जनात्मक क्षमताओं का विकास किया जाता है।

उपयोग - इसमें सामाजिक अधिगम को अधिक अवसर मिलता है। सामूहिक वाद-विवाद विधि से ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्षों के उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। छात्रों से ज्ञानवृद्धि के साथ अभिरुचियों तथा अभिवृत्तियों का विकास होता है। इसमे पहल (पहल) के लिये अवसर मिलता है।

दोष - इसके दोष निम्न प्रकार है -

1 - छात्र विषयान्तर बाते अधिक करते लगते है।

2 - कुछ ही छात्र अधिक बोलते रहते है।

3 - छात्रों में दो समूह बन जाते है, जिससे उनमे स्पर्धा तथा ईर्ष्या हो जाती है। परस्पर आलोचना की प्रवृत्ति हो जाती है।

4 - पूर्व-स्पर्धा के कारण वे आलोचना अधिक करते है।

Scanned by CamScanner

C-3 B.Ed 2019-2021

प्रदर्शन विधि
DEMONSTRATION METHOD

प्रदर्शन विधि के अन्तर्गत शिक्षक अपने व्यवहार या अन्य माध्यमो से सीखे जाने वाले कौशल एवं प्रक्रिया तथा उनसे सम्बन्धित प्रभावो को उत्पन्न कर उन्हे छात्रो के समक्ष प्रस्तुत करता है। उनकी व्याख्या करता है और उनका अभ्यास कराता है। छात्रो को अनुकरण द्वारा प्रदर्शित कौशल या प्रक्रियाओ को सीखने के लिए कहा जाता है।

इस विधि का प्रयोग सामान्यत: विज्ञान, तकनीकी, संगीत, शिल्प तथा कला आदि विषयो में प्रचुरता के साथ होता है। प्राय: शिक्षक अपने प्रदर्शन द्वारा छात्रो को अनुकरण हेतु प्रोत्साहित करते है, किन्तु आजकल चल-चित्रो, वि. वीडियो तथा टेपरिकार्डर के माध्यम से भी प्रदर्शन आयोजित किये जाते हैं।

स्वरूप (Form) :- व्याख्यान की अपेक्षा यह कम प्रभुत्ववादी है। इसमे तीन सोपानो का अनुसरण किया जाता है-

1- <u>प्रस्तावना</u> (Introduction) — इसमे उद्देश्यो की व्याख्या की जाती है।

2- <u>विकास</u> (Development) :- इसमें पाठ को विकसित किया जाता है, जिसमे शिक्षक प्रश्नो तथा सहायक सामग्री को प्रयुक्त करता है।

3- <u>एकीकरण</u> (Integration) :- इसके अन्तर्गत पाठ्यवस्तु के एकीकरण के लिये अभ्यास कराया जाता है तथा मूल्यांकन प्रश्न पूछे जाते है।

अधिनियम (मान्यताये) Assumptions :- प्रदर्शन विधि का उपयोग दो मान्यताओ पर आधारित है।

1- अधिगम में अनुकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। हम बहुत सी बाते दूसरो द्वारा प्रदर्शित व्यवहारो के अनुकरण द्वारा सीख पाते हैं।

2- प्रत्यक्षज्ञानात्मक अनुभव विकसित करने के लिए प्रदर्शन बहुत प्रभावी विधि है।

प्रदर्शन की प्रक्रिया (Procedures of demonstration) — प्रदर्शन के लिए प्राय: तीन प्रक्रिया प्रयुक्त होती है —

1- क्रिया द्वारा प्रदर्शन जिसमे शिक्षक अपनी क्रियाओ के माध्यम से किसी व्यवहार को प्रदर्शित करता है। जैसे भाषा शिक्षण मे सस्वर पाठ, आदर्श उच्चारण तथा संगीत की कक्षाओ मे आलाप, वादन आदि का प्रयोग।

2- पूर्व घटित घटनाओं, परिस्थितियों तथा भौतिक एवं मानसिक दशाओ का चित्रो, चलचित्रो एवं वीडियो टेप के जरिये प्रदर्शन। इसमे अत्यन्त सूक्ष्म परिस्थितियो को भी प्रदर्शित किया जा सकता है।

3- अभिनय एवं बोल कर प्रदर्शन करना। जिसमे भावात्मक अधिगम विकसित करने के प्रति विशेष जोर दिया जाता है।

अपेक्षित सावधानियाँ (Necessary precaution) :- प्रदर्शन की शुद्धता एवं प्रभावोत्पादकता के बारे में अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिये। यदि शिक्षक किसी व्यवहार को स्वयं शुद्धतापूर्वक प्रदर्शित करने की निपुणता नही रखता है तो आडिओ या वीडियो टेप द्वारा प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक पग उठाना चाहिए। छात्रो को प्रदर्शित व्यवहार का भली प्रकार अनुकरण करने हेतु पर्याप्त समय देना चाहिये और उन्हे अपनी शंकाओ या भ्रांतियो को शिक्षक के समक्ष रखने का मौका भी मिलना चाहिए।

सीमाएं (Limitations) :- इसकी निम्न सीमाएं है —

1- छात्र-अध्यापको की मौलिकता का विकास नही हो पाता है, क्योकि इसमें अनुकरण पर बल दिया जाता है।

2- छात्र पाठ-प्रदर्शन को आदर्श मानकर कौशल का विकास करते है। जबकि सभी अनुदेशक पाठ को सही रूप मे प्रस्तुत नही कर पाते है।

Scanned by CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

विचार मंथन या विचारावेश या मस्तिष्क उद्वेलन विधि
BRAIN STORMING METHOD

विचार मंथन मूलत: समस्या समाधान की विधि है जिसमें भाग लेने वाले कुछ व्यक्तियों को समस्या के बारे में सारे हल ढूँढने के लिए कहा जाता है। ये व्यक्ति प्रस्तुत किये जाने वाले समाधानों की तार्किकता संगति या गुणात्मकता पर ध्यान न देकर स्वत: स्फूर्त ढंग से जितने अधिक विचार उनके मन में आते हैं, उन्हें व्यक्त करते जाते हैं, उन्हें एक दूसरे की बातों पर आलोचनात्मक दृष्टि से न देखकर समस्या का हल ज्ञात करने के लिए कहा जाता है। उन्हें नवीन प्रस्तावों के बारे में सोचने के लिए भी कहा जाता है।

Brain storming का शाब्दिक अर्थ "अपने मस्तिष्क का उपयोग किसी समस्या पर धावा बोलने के लिए करना" है। इस विधि के प्रस्थापक 'अलेक्स एफ. आसबर्न' है। इनके अनुसार यह एक ऐसी विधि है जिसमें व्यक्ति की कल्पना या सर्जनशीलता का प्रयोग किया जाता है। उनकी दृष्टि में समूह द्वारा प्रयुक्त विचारावेश, व्यक्ति द्वारा अकेले प्रयुक्त विचारावेश की तुलना में समस्याओं का अपेक्षाकृत उत्कृष्ट हल प्राप्त करने में सहायक होता है।

अधिनियम (मान्यतायें) Assumptions :– विचारावेश प्रक्रिया के प्रयोग में अन्तर्निहित तीन मान्यतायें हैं :–

1- शिक्षण का लक्ष्य व्यक्ति की सर्जनशील एवं कल्पना के आधार पर समस्याओं का समाधान करना है।

2- बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप या रोक टोक के चिन्तन करने से समस्याओं का हल प्राप्त हो सकता है।

3- चिन्तन की प्रक्रिया में विचारों का अधिक से अधिक उत्पन्न समस्या का सर्जनात्मक हल ढूंढ निकालने में सहायक होता है।

Scanned by CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

विचार मंथन की प्रक्रिया (Procedure of Brain storming) —

:- विचार मंथन का प्रयोग करने हेतु शिक्षक को समूह के नेता की हैसियत से काम करना पड़ता है। वह पूरा परिवेश अनौपचारिक एवं शिथिल या कम तनावपूर्ण रखता है। विचारावेश शुरू करने से पूर्व वह उसमे भाग लेने वाले छात्रो को निम्न चार नियमो से परिचित करा देता है और उनके बारे मे विस्तारपूर्वक जानकारी देता है जिससे वे इन नियमो का उल्लंघन न कर सके।

1- आलोचना-प्रत्यालोचना के लिए कोई स्थान नही। व्यक्त विचारों का मूल्यांकन वर्जित है।

2- अत्यन्त आजादी के साथ विचार व्यक्त करना जरूरी है। जितने ही नये अद्भुत विचार रखे जायें उतना ही अच्छा है।

3- विचारों की अधिक से अधिक संख्या आवश्यक है। जितनी ही अधिक मात्रा में विचारों का प्रादुर्भाव होगा, उनके उपयोगी होने की उतनी ही अधिक सम्भावना हो सकती है।

4- विचारो को जोड़ना और उनमे समस्या-समाधान की दृष्टि से सुधार लाना अपेक्षित है।

विचार मंथन विधि के लाभ :— विचार मंथन विधि के निम्नांकित लाभ है :—

1- यह विधि रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है।

2- यह शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तो पर आधारित है। मानसिक विचार पारस्परिक विचार विमर्श से ही हो सकता है।

3- यह विधि कम खर्चीली होती है, क्योंकि इसे तैयार करने के लिए विशेष उपकरणों की आवश्यकता नही होती।

सीमाएं (Limitations) —

1- इस विधि में विषय के अध्यापन का व्यवस्थित तरीका नही है।

2- यह विधि उन प्रशिक्षुओ के लिए संभव नही है, जो भाग लेने के लिए अनिच्छुक होते है।

Scanned by CamScanner

C-3 B.Ed 1st Year (2019-2021)

विचार मंथन की प्रक्रिया (Procedure Of Brain storming) —

:- विचार मंथन का प्रयोग करने हेतु शिक्षक को समूह के नेता की हैसियत से काम करना पड़ता है। वह पूरा परिवेश अनौपचारिक एवं शिथिल या कम तनावपूर्ण रखता है। विचारावेश शुरू करने से पूर्व वह उसमे भाग लेने वाले छात्रों को निम्न चार नियमो से परिचित करा देता है और उनके बारे मे विस्तारपूर्वक जानकारी देता है जिससे वे इन नियमो का उल्लंघन न कर सके।

1 – आलोचना - प्रत्यालोचना के लिए कोई स्थान नही। व्यक्त विचारों का मूल्यांकन वर्जित है।

2 - अत्यन्त आजादी के साथ विचार व्यक्त करना जरुरी है। जितने ही नये अद्‌भुत विचार रखे जायें उतना उतना ही अच्छा है।

3 - विचारों की अधिक से अधिक संख्या आवश्यक है। जितनी ही अधिक मात्रा में विचारों का प्रादुर्भाव होगा, उनके उपयोगी होने की उतनी ही अधिक सम्भावना हो सकती है।

4 - विचारो को जोड़ना और उनमे समस्या - समाधान की दृष्टि से सुधार लाना अपेक्षित है।

विचार मंथन विधि के लाभ :- विचार मंथन विधि के निम्नांकित लाभ है :-

1 – यह विधि रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है।

2 - यह शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तो पर आधारित है। मानसिक विचार पारस्परिक विचार विमर्श से ही हो सकता है।

3 - यह विधि कम खर्चीली होती है, क्योंकि इसे तैयार करने के लिए विशेष उपकरणों की आवश्यकता नही होती।

सीमाएं (Limitations) —

1 - इस विधि में विषय के अध्ययन का व्यवस्थित तरीका नही है।

2 - यह विधि उन प्रशिक्षुओ के लिए संभव नही है, जो भाग लेने के लिए अनिच्छुक होते है।

Scanned by CamScanner

Subject - C-3 Topic 04/05/2020 to 09/05/2020

1. सामूहिक परिचर्चा
2. प्रदर्शन विधि
3 - भूमिका निर्वाह
4 - विचार मंथन
5. विचार मंथन की प्रक्रिया
6 विचार गोष्ठी

Scanned by CamScanner